NEERAJ®

MHI - 109

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

(Indian National Movement)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
(Indian National Movement)

Sample Question Paper—1 (Solved) 1
Sample Question Paper—2 (Solved) 1
Sample Question Paper—3 (Solved) 1
Sample Question Paper—4 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. राष्ट्र और राष्ट्रवाद (Nation and Nationalism) 1
2. उपनिवेश-विरोधी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन : एशिया और अफ्रीका 7
(Anti-Colonial National Liberation Movement : Asia and Africa)
3. भारतीय राष्ट्रवाद पर परिप्रेक्ष्य-1 (Perspectives on Indian Nationalism-1) 12
4. भारतीय राष्ट्रवाद पर परिप्रेक्ष्य-2 (Perspectives on Indian Nationalism-2) 18
5. 1857 का विद्रोह (Revolt of 1857) 24
6. भारतीय राष्ट्रवाद की बुनियाद (Foundations of Indian Nationalism) 33
7. आर्थिक राष्ट्रवाद (Economic Nationalism) 38
8. बौद्धिक और सामाजिक क्षेत्र में उपनिवेशवाद का प्रतिरोध 44
(Resistance to Colonialism in Intellectual and Social Spheres)
9. उग्र एवं जन आधारित राजनीति की ओर–स्वदेशी आंदोलन 50
(Towards Radical and Mass Politics–Swadeshi Movement)
10. प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान राष्ट्रवादी राजनीति और महत्त्वपूर्ण मोड़ 55
(Nationalist Politics During the War Period and Turning Point)
11. गाँधी का उदय (Emergence of Gandhi) 63
12. खिलाफत और असहयोग आंदोलन (Khilafat and Non-Cooperation Movements) 70
13. क्रांतिकारी प्रवृत्तियाँ (Revolutionary Trends) 76
14. परिषदों के भीतर व बाहर प्रतिरोध (Resistance Within and Outside the Councils) 82
15. सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement) 88
16. संवैधानिक विकास (Civil Disobedience Movement) 94
17. 1930 के दशक का वैचारिक फलक (The Ideological Spectrum in the 1930s) 99
18. रियासतों में राजनीतिक लोकतंत्रीकरण (Political Democratisation in the Princely States) 105
19. कांग्रेसी मंत्रिमंडल (Congress Ministries) 110
20. भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभमि (Prelude to Quit India Movement) 116

21. भारत छोड़ो आंदोलन 122
(Quit India Movement)
22. सुभाष चन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज 127
(Subhash Chandra Bose and Azad Hind Fauj)
23. युद्धोत्तर राष्ट्रीय आंदोलन 1945–47 135
(Post-War National Upsurges, 1945-47)
24. स्वतंत्रता की ओर–I 140
(Towards Freedom-I)
25. स्वतंत्रता की ओर–II 145
(Towards Freedom-II)
26. राष्ट्रीय आंदोलन और किसान 150
(National Movement and the Peasantry)
27. राष्ट्रीय आंदोलन और मजदूर वर्ग 156
(National Movement and the Working Class)
28. राष्ट्रीय आंदोलन और पूँजीपति वर्ग 161
(National Movement and the Capitalist Class)
29. राष्ट्रीय आंदोलन और जमींदार 167
(National Movement and the Landlords)
30. राष्ट्रीय आंदोलन और महिलाएं 172
(National Movement and Women)
31. राष्ट्रीय आंदोलन और दलित 177
(National Movement and the Dalits)
32. राष्ट्रीय आंदोलन और अल्पसंख्यक 182
(National Movement and the Minorities)
33. राष्ट्रीय आंदोलन की रणनीतियाँ 188
(Strategies of National Movement)
34. राष्ट्रीय आंदोलन और सांप्रदायिक समस्या 193
(Nationalist Movement and the Communal Problem)
35. भारतीय संविधान का निर्माण 198
(Making of the Indian Constitution)
36. राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत 203
(Legacies of National Movement)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

(Indian National Movement)

MHI-109

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. भारतीय राष्ट्र और राष्ट्रीय आन्दोलन पर उपनिवेशवादी और राष्ट्रवादी विचारों के बीच मुख्य अंतरों पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-14, प्रश्न 1

प्रश्न 2. भारत में आरंभिक राष्ट्रवादियों की धन की निकासी और भारत में उद्योगों की कमी पर व्यक्त किए गए दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-41, प्रश्न 3

प्रश्न 3. राष्ट्रीय आंदोलनों की विभिन्न प्रवृत्तियाँ कौन-सी थी? लिबरलों की असफलता के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-101, प्रश्न 1

प्रश्न 4. स्वराज पार्टी के निर्माण की पृष्ठभूमि क्या थी?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-84, प्रश्न 1

प्रश्न 5. 1935 के भारत सरकार कानून के प्रावधान क्या थे? कांग्रेस ने इसकी आलोचना क्यों की?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-97, प्रश्न 3

प्रश्न 6. 1937 के चुनाव नतीजों को आप किस नजर से देखते हैं? उसे कांग्रेस की सफलता माना जाए या असफलता? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-113, प्रश्न 2

प्रश्न 7. भारतीय संविधान के महत्त्वपूर्ण प्रावधानों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-35, पृष्ठ-201, प्रश्न 3

प्रश्न 8. मजदूरों की हालत में सुधार के लिए कानून बनाने का शुरुआती राष्ट्रवादियों ने क्यों विरोध किया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-27, पृष्ठ-157, प्रश्न 1

प्रश्न 9. पूना संधि के प्रस्तावों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-31, पृष्ठ-179, प्रश्न 2

प्रश्न 10. किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

(क) 1945-46 के चुनाव

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-24, पृष्ठ-140, '1945-46 के चुनाव'

(ख) रौलेट सत्याग्रह की पृष्ठभूमि

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-56, 'रौलेट सत्याग्रह की पृष्ठभूमि'

(ग) राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े क्षेत्रीय पहलू

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-123, 'आंदोलन से जुड़े क्षेत्रीय पहलू'

(घ) आरंभिक राष्ट्रवादी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-162, 'आरंभिक राष्ट्रवादियों की विचारधारा'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 2

(Solved)

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

(Indian National Movement)

MHI-109

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. राष्ट्रवाद के गैर-आधुनिकतावादी सिद्धांत क्या हैं? उनका महत्त्व क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 3

प्रश्न 2. भारतीय राष्ट्रवाद की परिघटना को सबाल्टर्न इतिहासकारों ने किस तरह से देखा है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-20, प्रश्न 2

प्रश्न 3. जिन्ना और मुस्लिम लीग द्वारा सीधी कार्रवाई के आह्वान के मद्देनजर देश की राजनीतिक स्थिति की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-24, पृष्ठ-143, प्रश्न 3

प्रश्न 4. समाजवादियों एवं कम्यूनिस्टों के विचारों और संबंधों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-101, प्रश्न 2

प्रश्न 5. महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में लाने में जन लामबंदी का गाँधीवादी तरीका क्यों कारगर सिद्ध हुआ?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-30, पृष्ठ-173, प्रश्न 1

प्रश्न 6. औपनिवेशिक सांस्कृतिक प्रभुत्व के विरुद्ध आरंभिक भारतीय बुद्धिजीवियों द्वारा विकसित सांस्कृतिक प्रतिरोध के प्रमुख रूपों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-46, प्रश्न 1

प्रश्न 7. गाँधी के राजनीतिक दर्शन को आकार देने में दक्षिण अफ्रीका के अनुभव का क्या महत्त्व था?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-65, प्रश्न 1

प्रश्न 8. आंदोलन के दौरान संचालित विभिन्न गतिविधियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-90, प्रश्न 2

प्रश्न 9. 1945 के बाद हुए जन विरोध-प्रदर्शनों के विभिन्न रूपों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-137, प्रश्न 1

प्रश्न 10. किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

(क) धर्म को खतरा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-25, 'धर्म को खतरा'

(ख) नई क्रांतिकारी चेतना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-77, 'नई क्रांतिकारी चेतना का प्रारंभ'

(ग) जन राष्ट्रवाद और किसान

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-26, पृष्ठ-151, 'जन राष्ट्रवाद और किसान'

(घ) औपनिवेशिक राज्य की प्रकृति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-33, पृष्ठ-188, 'औपनिवेशिक राज्य की प्रकृति'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
(Indian National Movement)

राष्ट्र और राष्ट्रवाद
(Nation and Nationalism)

1

परिचय

सामान्यत: किसी व्यक्ति को अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा और विचारधारा उसका राष्ट्रवाद है। प्रत्येक राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने राष्ट्र के प्रति राष्ट्रवाद से भरा होता है। राष्ट्रवाद की अवधारणा को विभिन्न इतिहासकारों और समाज-वैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध चलने वाला एक लम्बा और विशाल संघर्ष था। इस संघर्ष की प्रमुख विचारधारा और हथियार राष्ट्रवाद था। भारतीय राष्ट्रवाद में दो मुख्य विचारधाराएं शामिल थीं–साम्राज्यवाद का विरोध और राष्ट्रीय एकता। इन विचारधाराओं को मानने वाले लोग राष्ट्रवादी कहलाते थे। यह राष्ट्रवाद भारत सहित एशिया, अफ्रीका आदि के अलावा सम्पूर्ण विश्व के अनेक देशों में फैला हुआ था, जहां ब्रिटिश उपनिवेशी शासन था। आधुनिक विश्व में राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली राजनीतिक ताकत थी। राष्ट्रवाद को राष्ट्र के आन्दोलन, विश्वास, व्यवस्था, भावना और जुनून से जोड़ लिया था। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक राष्ट्र में यह व्याप्त था और इसने वैश्विक विचारधारा का रूप धारण कर लिया था। अनेक कहानियाँ, कविताएं, उपन्यास और साहित्य राष्ट्रवाद को आधार बनाकर लिखा गया। इस प्रकार राष्ट्रवाद एक जटिल अवधारणा बन गई थी, जिसका उदय विभिन्न परिस्थितियों में हुआ।

अध्याय का विहंगावलोकन

राष्ट्र, राष्ट्रवाद और राष्ट्र-राज्य को समझना

राष्ट्रवाद का प्रश्न

राष्ट्रवाद से तात्पर्य 18वीं और 20 शताब्दी के मध्य के समय से विकसित हुई एक विचारधारा से है। इस अवधि में छोटे समुदाय बड़े समुदाय में परिवर्तित होने लगे। नये समुदायों में नये रिश्ते और एकजुटता बनी। समूह और व्यक्ति एक-दूसरे से परिचित न होते हुए भी खुद को राष्ट्र के रूप में एक समझते थे। इसमें नई कल्पना थी। नये समुदायों का निर्माण अपनी भिन्न कल्पना से हो रहा था। प्रारम्भ में अधिकांश समुदाय परिचय पर आधारित थे, परन्तु नए राष्ट्रीय समुदाय में ऐसी बातें नहीं थीं, वह कल्पना पर आधारित था इसीलिए **बेनेडिक्ट एंडरसन** ने बताया कि राष्ट्र परिकल्पित समुदाय है। नये समूहों और समुदायों ने इस बात पर बल दिया कि उनका अपना प्रतिनिधि राज्य होना चाहिए। यह एक विशिष्ट स्थिति थी, जिसमें राज्य और समाज में अनुरूपता या पहचान असामान्य थी। यही स्थिति आगे चलकर राष्ट्र, राष्ट्रवाद और राष्ट्र-राज्य की विशेषता बन गई। सिद्धान्तकार **एर्नेस्ट गेलनर** ने बताया कि राष्ट्रवाद प्राथमिक राजनीतिक और राष्ट्रीय इकाई के एक समान होना चाहिए। इस परिभाषा में कुछ विशिष्टता है। इसमें कमी यह है कि यह राष्ट्र की एक समझ पर आधारित है। वस्तुत: राष्ट्र को परिभाषित करना एक जटिल कार्य है। सभी विद्वान सामान्य रूप से राष्ट्रवाद की सार्वभौमिक परिभाषा देने में तटस्थ रहे हैं। **एर्नेस्ट गेलनर** दो गुणों–संस्कृति और इच्छा पर बल देते हैं। उनका कहना है कि राष्ट्र मानव की प्रतिबद्धताओं, समर्पणों और एकजुटता का परिणाम है। जब लोगों की एक श्रेणी के सदस्य पूरे विश्वास के साथ एक-दूसरे के पारस्परिक अधिकारों और कर्त्तव्यों का अपनी सदस्यता की हिस्सेदारी के न्याय के रूप में पहचान करते हैं, तब यह श्रेणी ही राष्ट्र बन जाती है।

राष्ट्र और राष्ट्र-राज्यों को परिभाषित करना

राष्ट्र को परिभाषित करने के लिए सर्वप्रथम इसकी प्रकृति पर ध्यान दिया गया, परन्तु यह कुछ निश्चित ऐतिहासिक परिस्थितियों का उत्पाद है। **अर्नेस्ट रेनान** ने राष्ट्र की नस्लीय और प्राकृतिक परिभाषाओं को रद्द कर दिया। इनके स्थान पर उन्होंने इच्छा, स्मृति और चेतना पर आधारित राष्ट्र की ऐच्छिक परिभाषा दी, जो राष्ट्रों के ऐतिहासिक निर्माण और राष्ट्रों का निर्माण इच्छा और चेतना पर आधारित था। यह राष्ट्रों के समझने में नया मोड़ था। 1882 में रेनान ने अपने भाषण में कहा था कि राष्ट्र कोई स्थायी वस्तु नहीं है। यूरोप में राष्ट्र के निर्माण में श्रेणियों के निर्माण पर बल दिया जाता

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

था, परन्तु श्रेणियां प्रकृति में इतनी सामान्य थीं कि उन्हें अधिकांश समुदायों में हासिल किया जा सकता था। इच्छा और चेतना के आधार पर अनेक गैर राष्ट्रीय समुदायों को भी पहचाना जा सकता था। इस प्रकार रेनान की परिभाषा ने राष्ट्रों के सामान्य भाग को समुचित रूप से पहचाना, परन्तु विशिष्ट पक्ष की ओर ध्यान नहीं दिया।

1913 ई. में जोससेफ स्टालिन ने रेनान की परिभाषा की कमियों की जानकारी दी और राष्ट्रों की कुछ विशिष्टताएं बताईं। स्टालिन ने राष्ट्र को लोगों के एक स्थायी समुदाय की ऐतिहासिक रचना बताया, जो समान भाषा, क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र और मनोवैज्ञानिक बनावट के आधार पर गठित होता है।

यहां तीन तत्त्वों–आत्मपरक, वस्तुनिष्ठ और वैचारिक को मिलाकर राष्ट्र की अच्छी परिभाषा बन सकती है, जिसमें कभी राष्ट्रों की संभावनाएं शामिल हो सकती हैं। फिर भी यह उन समुदायों को छोड़ देता है, जो राष्ट्र नहीं हैं। इस प्रकार रेनान और गेलनर की परिभाषाओं से राष्ट्रवाद और राष्ट्र-राज्य को आसानी से समझा जा सकता है। राष्ट्रवाद राष्ट्र और राज्य की एकता पर बल देने के साथ इस बात को महत्त्व देता है कि राज्य जनता के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करे। एक राष्ट्र-राज्य इसी प्रकार का राज्य होता है। राष्ट्र एक बड़ा आधुनिक समुदाय है, जो अपना प्रतिनिधि राज्य चाहता है।

राष्ट्रवाद के सिद्धांत के सामने चुनौतियाँ

नये राष्ट्रीय समुदाय के उद्देश्य से कृषि समाज था एक औद्योगिक समाज में परिवर्तन हुआ और एक नए किस्म के सामाजिक ढाँचे का निर्माण हुआ, जिसे औद्योगिक समाज का नाम दिया गया। इन दोनों बदलावों में अनेक विद्वानों का विचार था कि दोनों एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। **एर्नेस्ट गैलनर** ने इसी आधार पर यह सिद्धांत दिया कि इन बदलावों से राष्ट्रवाद का उदय हुआ। बड़ी संख्या में विद्वानों ने राष्ट्रवाद को एक आधुनिक प्रक्रिया बताया है और इसे उद्योगवाद से जोड़ा है। उनके अनुसार औद्योगीकरण में राष्ट्र का निर्माण अंतर्निहित था। राष्ट्रवाद को उद्योगवाद से जोड़ने के सिद्धांत में एक विशेष समस्या है। राष्ट्रवाद विश्व के अधिकांश देशों में फैला है, परन्तु उद्योगवाद केवल यूरोप तक ही सीमित था। एशिया और अफ्रीका देशों में इसका फैलाव नहीं हुआ। इसके कारण यहाँ साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का बोलबाला हुआ। इस प्रकार राष्ट्रवाद के अनेक सिद्धांत कहे जा सकते हैं।

राष्ट्रवाद के सिद्धांत

राष्ट्रवाद के सभी विद्वान इस बात से सहमत हैं कि राष्ट्रवाद को किसी विशिष्ट या आंतरिक कारकों या समाज के अन्दर सक्रिय कारणों से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। इसको स्पष्ट करने के लिए समुचित बाहरी कारकों या विशेष समाज के बाहरी कारकों की जरूरत है। टॉम नैर्न का कहना है कि यह सही नहीं है कि किसी प्रकार का राष्ट्रवाद आंतरिक गतियों का उत्पाद है। राष्ट्रवाद के विद्वानों में मुख्य मतभेद बाहरी कारकों भी पहचान को लेकर है। कुछ लोग राष्ट्रवाद को मानव समाज के विकास के आवश्यक चरण के रूप में देखते हैं। अन्य सिद्धांतकार राष्ट्रवाद को एक मानव भावना या पहचान के लिए बड़ी सामाजिक और मनोवैज्ञोनिक जरूरत या एक बड़ी पूर्णता के साथ पहचानते हैं। इस प्रकार राष्ट्रवाद की अवधारणा व्यापक है। इसके लिए विभिन्न प्रकार की व्याख्याएं सामने आती हैं।

गैर-आधुनिकतावादी सिद्धांत

आधुनिकतावादी राष्ट्र को एक आधुनिक परिघटना मानते हैं और इसके उद्भव काल को पिछली तीन शताब्दी से भी कम मानते हैं। इसके विपरीत गैर आधुनिकतावादी राष्ट्रवाद को अधिक अवधि का मानते हैं। उनका कहना है कि जटिलता के साथ गुंफित राष्ट्रवाद इतने कम समयांतराल में नहीं हो सकता और इसका विकास लंबे समय में हुआ है। जिस प्रकार आधुनिकतावादी विद्वानों में आपसी सहमति नहीं है, उसी प्रकार गैर-आधुनिकतावादियों में भी आपसी सहमति नहीं है। उन्हें विकासवादियों, प्रकृतिवादियों और निरन्तरवादियों में विभाजित किया जा सकता है। प्रकृतिवादी राष्ट्रवाद को अति प्राकृतिक भावना के रूप में देखते हैं। प्रकृतिवादियों के आसपास ही निरन्तरता की स्थिति है। उनका कहना है कि पाकिस्तान तो उसी क्षण अपने अस्तित्व में आ गया, जब मुस्लिम शासन स्थापित होने से गैर-मुसलमानों का बड़े स्तर पर धर्मांतरण हुआ।

वस्तुतः सभी देशों की अपनी छवि होती है, जिसे राष्ट्रवादी विचारक या नेता बनाते हैं। राष्ट्रवाद पर किये महत्त्वपूर्ण शोधों में निरन्तरवादियों की स्थिति को समझा गया है तथा उसे 'आविष्कृत परंपरा' के रूप में व्यक्त किया गया। आविष्कृत परम्परा में राष्ट्रवादी अतीत तथा परम्परा का प्रयोग करते हैं और उससे प्रेरणा प्राप्त करते है। वे अपने राष्ट्र के लिए अतीत, इतिहास तथा परम्परा से इसकी उपस्थिति का दावा करते हैं। उनके अनुसार परम्परा का रूप आविष्कृत या कृत्रिम होता है। परम्परा का आविष्कार विशेष प्रकार से किया जाता है, जिससे इसका इस्तेमाल राष्ट्रवादियों के समर्थन में हो। प्रमुख इतिहासकार एरिक हॉब्सबाम की राष्ट्रवाद की अवधारणा भी महत्त्वपूर्ण है। उनका तर्क है कि मानव इतिहास के पूर्व आधुनिक काल से गुजरते हुए राष्ट्रवाद की व्याख्या की जा सकती है। पूर्व उपस्थित संस्कृतियों, विरासतों तथा विभिन्न अन्य नैतिक संधियों, भावनाओं एवं पूर्व स्मृतियों पर राष्ट्रवाद केन्द्रित है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक-दूसरे के साथ बढ़ती है और राष्ट्र के उदय में योगदान देती है।

आधुनिकतावादी सिद्धांत

राष्ट्रवाद का एक प्रभावशाली आधुनिकतावादी सिद्धांत **अर्नेस्ट गैलनर** द्वारा दिया गया। गैलनर राष्ट्रवाद के उदय को विश्व के कृषक समाज से औद्योगिक समाज में रूपान्तरण के रूप में व्यक्त करते हैं। नये औद्योगिक समाज ने बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय समुदायों के सृजन को आवश्यक बना दिया। औद्योगिक समाज में कुछ ऐसी विशेषताएं थीं, जो सम्पूर्ण विश्व में एक शक्ति के रूप में राष्ट्रवाद के उभार के रूप में सामने आईं। यद्यपि गैलनर के सिद्धांत में एक बड़ी समस्या थी। गैलनर द्वारा वर्णित औद्योगिक समाज पूर्णरूप से विकसित यूरोपीय समाजों में विकसित हो सकता था। इसके विपरीत यही राष्ट्रवाद वास्तव में एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा और यह विकसित तथा अविकसित दोनों प्रकार के देशों में फैला, इसलिए प्रश्न उठता था कि एशिया तथा अफ्रीका के देशों में राष्ट्रवाद की व्याख्या किस प्रकार की जाए।

इस प्रश्न का उत्तर एक अन्य आधुनिकतावादी विद्वान **टॉम नैर्न** के सिद्धांत से मिला था। उसने राष्ट्रवाद को वैश्विक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के क्रियाकलापों के साथ जोड़ा, परन्तु गैलनर के विपरीत

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उन्होंने अपने व्याख्या की तलाश विकास, शिक्षा तथा औद्योगिक समाज की गतिशीलता की अपेक्षा औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप सभी समुदायों को मिली विषमता तथा विस्थापन में की। इस भिन्नता ने विश्व को 'यूरोपिन अभिकेन्द्र' तथा एक एशियाई तथा अफ्रीकी परिधि में विभक्त कर दिया अर्थात् पूँजीवाद ने साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद को जन्म दिया। क्षेत्र के संभ्रांतों ने इस विषमता के अपमान को अधिक महसूस किया। इसका सामना करने के लिए एकता तथा एकात्मकता की दृष्टि ने एक विशाल समुदाय निर्माण करने का कार्य किया। सभी सीमाओं से परे जाकर उन्होंने औपनिवेशिक वर्चस्व के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इसी प्रक्रिया के दौरान इन उपनिवेशों में राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

भारतीय राष्ट्रवाद

निश्चित रूप से **टॉम नैर्न** का सिद्धांत वास्तविक प्रक्रिया के बेहद करीब की व्याख्या करता है, जिसमें 19वीं तथा 20वीं सदी में भारतीयों के राष्ट्रीय समुदाय का विकास हुआ। भारतीय राष्ट्रवादी अनुभव को सबसे अच्छे तरीके से तभी समझा जा सकता है, जब इसे 'सामान्य' और 'विशेष' कारकों में विभाजित किया जाए। सामान्य कारक अन्य समुदायों में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया की तरह व्यापक रूप से समान होगा, परन्तु भारतीय अनुभव के पास अपनी तरह की विशेषताएं हैं। भारतीय राष्ट्रवाद को उचित रूप से समझने तथा उसकी व्याख्या करने के लिए इन दो बातों का वर्णन आवश्यक है। पहली बात सामान्य स्थितियों पर नजर बनाये रखने तथा वैश्विक शक्तियों को समझने की जरूरत है, जो राष्ट्रवाद के उदय के परिणाम के रूप में सामने आती है। इसी प्रकार विशेष भारतीय स्थितियों पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है, जो भारतीयों में एक राष्ट्रीय समुदाय के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामान्य तथा सामाजिक विशेष कारकों का ध्यान रखना राष्ट्रवाद के सिद्धांत के लिए आवश्यक है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्र तथा राष्ट्रवाद के उभार को लेकर आधुनिकतावादी सिद्धांतों की व्याख्या करें।

उत्तर–राष्ट्र तथा राष्ट्रवाद के उभार को लेकर तीन आधुनिकतावादी सिद्धांत हैं–

1. एली कड्यूरी का आधुनिकतावादी सिद्धांत–कड्यूरी ने इस सिद्धांत की स्थापना 1961 में की। इसके मुख्य तथ्य निम्नलिखित हैं–

(i) उन्होंने राष्ट्रवाद को एक सिद्धांत के रूप में माना। उन्होंने इसे आधुनिक यूरोप के बौद्धिक इतिहास में प्रभावशाली ढंग से अनुभव किया। उन्होंने अपने ग्रंथ में लिखा है, ''राष्ट्रवाद का सिद्धांत 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यूरोप आविष्कृत किया गया था।''

(ii) उनके अनुसार यह राष्ट्रवाद की असरंचनात्मक व्याख्या थी, जिसके अनुसार राष्ट्रवाद की जड़े गहरी हैं, न कि इसकी कोई ठोस संरचनाएं हैं और न ही विशेष शर्त है, परन्तु ऐसा केवल यूरोपीय विचारकों के विचारों तथा सिद्धांतों में था।

2. गैलनर की तुलना में आधुनिकतावादी सिद्धांत–कड्यूरी के सिद्धांत की तुलना में एक प्रभावशाली विकल्प गैलनर द्वारा प्रस्तुत किया गया। उसके सिद्धांत में मुख्य बातें निम्नलिखित हैं–

(i) गैलनर के अनुसार राष्ट्रवाद का उदय कृषि से औद्योगिक विश्व के रूपान्तरण में हुआ। उन्होंने राष्ट्रवाद को शक्ति तथा संस्कृति की नई अंत:क्रिया को सृजित करने वाले नये आर्थिक तथा उत्पादक बलों के सामने आने के रूप में देखा।

(ii) गैलनर का सिद्धांत उसी दृष्टिकोण से भौतिकवादी था, क्योंकि राष्ट्रवाद के उदय की आधारभूत प्रेरणा के रूप में इसमें विचार और सिद्धांत नहीं दिखता है। यह राष्ट्रवाद को नये आर्थिक बलों के संचालन के उत्पादन के रूप में देखता है।

(iii) यह सिद्धांत अनवरत विकास पर आधारित था। वस्तुत: यह अर्थव्यवस्था तभी कायम रह सकती थी, जब यह विकसित होती रहे।

(iv) यह अनवरत विकास करने वाली अर्थव्यवस्था ने स्थिर पुरानी व्यवस्था को समाप्त कर दिया।

(v) यह अर्थव्यवस्था लगातार चलती रहे, इसके लिए सम्पूर्ण साक्षरता आवश्यक थी। यह साक्षरता का रूप समतामूलक होना चाहिए था, ताकि बड़ी संख्या में अज्ञात तथा एक-दूसरे से अपरिचित लोग परस्पर संवाद कर सकें।

(vi) इस औद्योगिक अर्थव्यवस्था में गतिशीलता थी, जो व्यावसायिक तथा स्थानीय दोनों प्रकार की थी। इस नई अर्थव्यवस्था के कारण लोग अपने संगठित समुदाय से अलग-थलग कर एक ऐसी स्थिति में डाल दिए गए, जो उनके लिए नई थी और न उससे उनका कोई लगाव था।

(vii) राष्ट्रवाद की नई अर्थव्यवस्था समतावाद पर आधारित थी। इसने लोगों की प्रतिष्ठा तथा हैसियत आधारित पदानुक्रम को समाप्त कर दिया। इसने पुरानी संस्कृति, पुरानी संरचनाओं, पुराने पदानुक्रम को भी नष्ट कर दिया।

(viii) पुरातनता और संभ्रांतों की उच्च संस्कृति का संरक्षण नई अर्थव्यवस्था के लिए पूर्णत: तर्कसंगत नहीं रह गया था। इसके कारण बहुस्थानिक लोक संस्कृति तथा विशेष उच्च संस्कृति दोनों के लिए बने रहना मुश्किल हो गया तथा दोनों का रूपान्तरण एक व्यापक तथा सहभागिता वाली उच्च संस्कृति में हो गया।

(ix) आधुनिक तथा प्रौद्योगिकी ने नई अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। फलस्वरूप वह इतनी शक्तिशाली हो गयी कि पुरानी व्यवस्था की जगह नई सामाजिक व्यवस्था ने ले ली। यूरोपीय समाज में प्रारम्भिक मतभेद समाप्त हो गये तथा उनकी जगह इन नई संस्कृति पर आधारित एक नई रेखा बन गई।

(x) इस परिवर्तन से राज्य की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण हो गई। नया आर्थिक संसार इतना विशाल हो गया कि इससे सिर्फ राज्य होकर ही प्रभावशाली ढंग से निपटा जा सकता था। राज्य इसे लोगों के समर्थन के कारण प्रभावशाली ढंग से कायम रख सका, अब यह आवश्यक था कि राज्य समाज का प्रतिनिधित्व करे। यह सभी एक नये प्रकार की व्यवस्था के लिए था।

(xi) गैलनर का यह राष्ट्रवाद का सिद्धांत एक विश्वसनीय सिद्धांत था, परन्तु इस सिद्धांत के साथ सबसे बड़ी समस्या है कि इस सिद्धांत का जुड़ाव भारत या सही मायने में अन्य उपनिवेशों के विकास के मामलों के साथ नहीं हो पाया। गैलनर के सिद्धांत की सबसे बड़ी ताकत घटनाक्रम को वैश्विक प्रकृति पर उसकी बहुत अच्छी पकड़ है। हालांकि यह सिद्धांत एशिया और अफ्रीका के औपनिवेशिक समाज

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

के राष्ट्रवादी अनुभवों को पर्याप्त रूप से व्याख्या करता प्रतीत नहीं होता है। सही मायने में कहा जा सकता है कि यह सिद्धांत पूर्णरूप से पश्चिमी यूरोप के अनुभवों के आधार पर निर्मित था तथा बाद में सभी मानव मात्र के लिए वैध रूप में व्यापक हो गया।

3. टॉम नैर्न का आधुनिकतावादी सिद्धांत–यह सिद्धांत औपनिवेशिक समाज की व्याख्या न्यायसंगत ढंग से करता है। उसके सिद्धांत की मुख्य बातें निम्नलिखित हैं–

(i) यह सिद्धांत आधुनिकतावादी होने के साथ-साथ सार्वभौमिकतावादी था। राष्ट्रवाद मानव विकास के किसी विशेष चरण का एक अनिवार्य तथा एकीकृत परिणाम है। नैर्न राष्ट्रवाद को विश्व तथा पूँजीवाद में अंतर्निहित असमान अविकास के पूँजीवादी रूपान्तरण के रूप में देखते हैं।

(ii) एशिया और अफ्रीका के औपनिवेशिक समाज में शीघ्र ही असमानता के तीव्र अपमान को महसूस किया गया। इन समाजों के संभ्रांत वर्ग ने यह कहना शुरू कर दिया कि इस प्रकार की प्रगति का तात्पर्य उनके लिए उपनिवेशवादी वर्चस्व है। पूँजीवाद ने उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद की एक प्रणाली का सृजन किया। उपनिवेश का उद्देश्य लोगों की एक बड़ी संख्या को शासन से अलग रखना था। उन्हें नये तंत्र में शोषण का शिकार होना पड़ा। औपनिवेशिक समाज के इस अपमान ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया।

(iii) इस युग में पूँजीवाद के दो चेहरे स्पष्ट हो गये। एक ओर जहाँ यूरोपीय विश्व में इससे संपत्ति, समृद्धि तथा गतिशीलता आई, दूसरी ओर इससे आर्थिक विषमता तथा उपनिवेश के लोगों का राजनीतिक शोषण हुआ। राष्ट्रवाद इसी स्थिति के खिलाफ एक प्रतिक्रिया था। औपनिवेशिक समाज के संभ्रांतों को वर्चस्व, शोषण तथा उनको अलग करने वाली इस स्थिति के खिलाफ होने वाले प्रतिरोध को संगठित करने के लिए पहल करनी पड़ी।

(iv) राष्ट्रवाद लाने में मध्यवर्ग के बुद्धिजीवियों का भी योगदान था। इन्होंने लोगों की भाषा पर ध्यान केन्द्रित किया। इस नई भावना ने संभ्रान्तों को बड़े पैमाने पर सामान्य से जोड़ दिया तथा विदेशी वर्चस्व के खिलाफ आम लोगों को एकजुट कर दिया और एक सामान्य संघ के लिए लोगों को तैयार कर दिया। राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद के विरुद्ध संभ्रांतों तथा जनसमूहों में संयुक्त संघर्ष की प्रक्रिया एक स्वाभाविक उपज था।

इस प्रकार नैर्न का सिद्धांत राष्ट्रवाद की यह एक आवश्यक आधुनिकतावादी सोच है। उसकी यह सोच अन्य आधुनिकतावादी विज्ञानों से सर्वथा भिन्न है, जिसका ध्यान यूरोप पर केन्द्रित होता है। उनका सिद्धांत सामान्य रूप से उपनिवेश विरोधी राष्ट्रवाद तथा विशेष रूप से भारतीय राष्ट्रवाद के लिए एकदम सटीक है।

प्रश्न 2. राष्ट्र तथा राष्ट्र राज्य की विभिन्न परिभाषाओं की आलोनचनात्मक व्याख्या करें।

उत्तर–सर्वप्रथम में राष्ट्र और राष्ट्र राज्य को परिभाषित करने के लिए उसकी प्रकृति पर प्रश्न उठाना और खारिज करना जरूरी है। राष्ट्र एक प्राकृतिक समुदाय न होकर, एक ऐतिहासिक श्रेणी है या जिसे इतिहास में इतिहास के द्वारा निर्मित किया गया है। यह कुछ निश्चित ऐतिहासिक परिस्थितियों का उत्पाद है। कई सिद्धांतकारों ने राष्ट्र और राष्ट्र-राज्य की परिभाषा दी है, परन्तु सभी एक-दूसरे भिन्न हैं। प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएं एवं उसकी आलोचनात्मक व्याख्याएं निम्नलिखित हैं–

1. अर्नेस्ट रेनान–19वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में अर्नेस्ट रेनान ने राष्ट्र की नस्लीय और प्राकृतिक परिभाषाओं को खारिज कर दिया। उसने इनके स्थान पर इच्छा, स्मृति और चेतना पर आधारित राष्ट्र की ऐच्छिक परिभाषा दी। उसके इस परिभाषा के दो प्रमुख तत्व निम्नलिखित थे–

(i) यह राष्ट्रों को पूर्व में मौजूद तथ्य के रूप में न देखकर इनके ऐतिहासिक निर्माण पर बल देती थी।

(ii) यह इस धारणा को नहीं मानती थी कि राष्ट्रों का निर्माण प्राकृतिक सीमाओं से होता है। प्रायः राष्ट्र की सीमाएं नदी, पर्वत और पर्वत द्वारा निर्धारित की जाती थीं। रेनान के अनुसार राष्ट्रों का निर्माण इच्छा और चेतना द्वारा होता है।

आलोचना–रेनान की परिभाषा की निम्नलिखित रूपों में आलोचना की जाती है–

(i) राष्ट्रों को परिभाषित करने में यह परिभाषा परिवर्तनकारी सिद्ध हुई। इसने राष्ट्रों को एक आकस्मिक आवश्यकता के रूप में महसूस किया, जिसे मानव इच्छा के माध्यम से लाया गया। इसके अनुसार राष्ट्रों के बारे में कोई वस्तु मजबूत और स्थायी नहीं थी। उसका निर्माण एवं समाप्ति दोनों संभव था।

(ii) राष्ट्र की अवधारणा के विषय में 1882 के अपने भाषण में अर्नेस्ट रेनान ने कहा था, "राष्ट्र कोई स्थिर वस्तु नहीं है। जो शुरू हुए हैं, उनका खात्मा भी होगा। इस बात की पूरी संभावना है कि उन्हें यूरोपीय संघ प्रतिस्थापित करेगा, लेकिन यह उस सदी का कानून नहीं है, जिसमें हम रह रहे हैं। मौजूदा समय में राष्ट्रों की मौजूदगी अच्छी है और स्वतंत्रता की गारंटी है, जो खो जाती अगर दुनिया के पास एक ही कानून और एक ही मालिक होता।"

(iii) इस विचार के साथ एक बड़ी समस्या थी, जो इस तथ्य से सर्वथा अलग थी कि यह यूरोप केन्द्रित थी। यह श्रेणियों की इच्छा, विचार, याद और चेतना के माध्यम से यह राष्ट्रों की अच्छे और कारगर उपाय से गणना करता था, जो राष्ट्रों को एक संकेत दे सकता था।

(iv) परन्तु ये श्रेणियाँ प्रकृति में इतनी सामान्य थी कि उन्हें अधिकांश समुदायों में देखा जा सकता था। इच्छा और चेतना के आधार पर अनेक गैर-राष्ट्रीय समुदायों को भी पहचाना जा सकता था। इस प्रकार सभी प्रकार के मानव समुदायों के एक बड़े पूल से विशिष्ट और अलग मानव समुदाय की पहचान संभव नहीं है।

(v) रेनान की परिभाषा ने राष्ट्रों के सामान्य हिस्से को समुचित ढंग से प्रस्तुत किया, परन्तु उसने उसके विशिष्ट पक्ष की उपेक्षा कर दी है।

2. जोसेफ स्टालिन–स्टालिन ने 1913 में राष्ट्र और राष्ट्र-राज्य की विशेषताओं को बताया, जो निम्नलिखित हैं–

(i) स्टालिन के अनुसार राष्ट्र लोगों के एक स्थायी समुदाय की ऐतिहासिक उपलब्धि है, जो समान भाषा, क्षेत्र, आर्थिक जीवन एवं मनोवैज्ञानिक बनावट के आधार पर गठित होता है और साझी संस्कृति में दिखाई देता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com